"पं नारद कृत "संगीत मकरंद" ग्रंथ मे वर्णित ताल एवं अवनद्ध वाद्यों का समग्रलक्षी अध्ययन"

"Pt. Narad krut "Sangeet Makarand" Granth me varnit Taal evm Avanaddha Vaadhyo ka Samagralakshi Adhyayan"

A Thesis Submitted

To

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA FOR THE AWARD OF THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY

IN

TABLA

BY

AKSHITA BAJPAI

UNDER THE GUIDEANCE OF

PROF. GAURANG BHAVSAR

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA
सत्यं शिवं सुन्दरम्
Estd. 1949
Accredited "A+" by NAAC

Prof. Gaurang Bhavsar
HEAD
Department of Tabla
Faculty of Performing Arts
The M. S. University of Baroda

DEPARTMENT OF TABLA
FACULTY OF PERFORMING ARTS
THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA
VADODARA -390001

2019-2024

DEAN
Faculty of Performing Arts
The Maharaja Sayajirao University of Baroda
Vadodara.

Registration Date: 20 March 2019

Registration No: FOPA/86

उपसंहार

'संगीत मकरंद' में कई उल्लेखनीय तत्व हैं जिन पर सावधानीपूर्वक शोध के बाद विचार किया गया है । यहां मैं इन विषयों पर चरण दर चरण एक बार फिर प्रकाश डाल रही हूं। "संगीत मकरंद" एक संक्षिप्त संगीत रचना है जिसमें दो अध्याय हैं, जिनमें से प्रत्येक में चार खंड हैं। यह नारद उद्धरणों का संग्रह नहीं है, बल्कि एक अकेली, व्यापक पुस्तक है। 'संगीत मकरंद' अभी तक किसी रचना का विषय नहीं बनी है। इस कृति का अपना नाम है और यह नारद के कई विशिष्ट और अलग-अलग दृष्टिकोणों से बनी है जो किसी अन्य कृति में मौजूद नहीं हैं। "संगीत मकरंद" के समान कई संक्षिप्त रचनाएँ मौजूद हैं, जैसे "ओउमापटम," "दत्तिलम," "संगीत चूड़ामणि," "वीणा लक्षणम," इत्यादि। नतीजतन, इस कार्य का आकार इस सुझाव का समर्थन नहीं करता है कि यह एक संकलन है। मूल पांडुलिपि, जो अत्यंत अस्थिर और क्षतिग्रस्त रूप में हो सकती है, प्रतिलिपि में उपलब्ध है। परिणामस्वरूप, नकल करने वाले ने "संगीत रत्नाकर" और अन्य, (जहाँ तक वह बता सकता था) के कुछ हिस्सों को "संगीत मकरंद" की क्षतिग्रस्त मूल पांडुलिपि से पूरी तरह से लिखित छंदों में से ले लिया। क्योंकि कुछ श्लोक बिल्कुल निरर्थक हैं। कई संगीतकारों ने अपने कार्यों के लिए सामान्य शब्द नारद का उपयोग किया है। लेकिन लेखक नारद "संगीत मकरंद" को किसी विशिष्ट समय सीमा में रखने के लिए कोई संकेत नहीं देते हैं। 'संगीत मकरंद' कार्य तिथि फिलहाल अज्ञात है। तर्कसंगत और ठोस तर्कों के साथ आंतरिक और बाह्य माहिती का खजाना प्रदान करने के बाद, मैंने "संगीत मकरंद" को सातवीं और दसवीं शताब्दी के बीच रखा है। 'संगीत रत्नाकर' की तुलना में 'संगीत मकरंद' की प्रधानता गांधार ग्रामों द्वारा प्रदर्शित की गई है, और शारंगदेव ने नारद से उद्धृत तथ्यों को कैसे व्यवस्थित किया। नारद द्वारा विद्वानों और संगीतकारों (मात्र गुप्त, लगभग 550 ई.) के नामों का उल्लेख इंगित करता है कि यह काम छठी शताब्दी से पुराना नहीं है। नारद की संगीत प्रणाली के अतिरिक्त सिद्धांत यह स्थापित करते हैं कि यह तिथि नौवीं या ग्यारहवीं शताब्दी के बाद की नहीं है। महामहेश्वर के नाम के प्रकट होने के साथ 'संगीत मकरंद' समय के साथ आगे बढ़ता है। इस पर गहन चर्चा की गई है, विवाद का प्राथमिक मुद्दा यह है कि अभिनव गुप्त का नाम शिक्षाविदों और कलाकारों की सूची से गायब है। यदि नारद ने महामहेश्वर के नाम की घोषणा की थी- एक अपेक्षाकृत सामान्य तथ्य जिसके लिए किसी के समर्थन की आवश्यकता नहीं है- तो वे इसका उल्लेख कर सकते थे। विद्वानों ने मुख्य रूप से अभिनव गुप्त का काल (दसवीं शताब्दी ईस्वी) से पहले का बताया है। इसलिए शोधार्थी द्वारा 'संगीत मकरंद' को सातवीं और दसवीं शताब्दी के बीच रखा गया और यह पुष्टि की गई है कि गांधार ग्राम मूर्छनाओं का उपयोग किया गया है, जिनकी चर्चा 'संगीत मकरंद' मे की गई है, और उनके राग में भी उपयोग किया गया है। यदि नारद ने महामहेश्वर का नाम कहा था-और एक बहुत ही सामान्य तथ्य के लिए जिसे किसी के सत्यापन की आवश्यकता नहीं है-तो वह इसे ला सकते थे। विद्वानों

ने मुख्य रूप से अभिनव गुप्त (दसवीं शताब्दी ईस्वी) से पहले "संगीत मकरंद" की नियुक्ति पर आपत्ति जताई थी। हालाँकि, उनकी आपत्ति उपरोक्त तर्क से अस्वीकृत हो गई थी, इसलिए "संगीत मकरंद" को सातवीं और दसवीं शताब्दी के बीच रखा है। इस बात पर चर्चा की गई है कि गांधार ग्राम की मूर्छनाओं के साथ उपयोग कैसे करते हैं, और यह पुष्टि की गई है कि वह उन्हें अपने राग में उपयोग करते हैं चूँकि उन्होंने केवल ग्रह (प्रारंभिक नोट) स्वर प्रदान किया है, उनके राग पूरी तरह से मूर्छना प्रणाली पर आधारित हैं। तीन से अधिक संपूर्ण रागों की समान शुरुआत और प्रमुख स्वर उनके तीन ग्रामों के उपयोग की पुष्टि करते हैं। यह राग कई अन्य रागों में से हैं। नारद ने ध्रुव गण, गीति या ग्राम राग के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा है। वह अपने वर्गीकरण की प्राथमिक प्रणाली के रूप में आठ रागों का उपयोग करते हैं, जिनमें से प्रत्येक की तीन पत्नियाँ होती हैं। यह प्रति प्रहर तीन घंटे और प्रति दिन और रात आठ प्रहर पर आधारित है। वर्ष की छह ऋतुओं के आधार पर दूसरे राग वर्गीकरण में छह राग और छह रागिनियाँ हैं। नारद रंगमंच का अध्ययन नहीं करते इसके बजाय, उन्हें संगीत में अधिक रुचि है। महत्व की दृष्टि से नृत्य संगीत के बाद दूसरे स्थान पर आता है। केवल नाटकीयता उनकी विशेषज्ञता का क्षेत्र नहीं है। नारद शिक्षित बुद्धिजीवियों के लिए संगीत लिखते हैं जो अच्छे संगीत की सराहना कर सकते हैं, जैसा कि नौ प्रतिष्ठित शिक्षाविदों या मशहूर हस्तियों की अदालत के वर्णन से प्रमाणित है। नारद की आध्यात्मिक प्रवृत्ति और विषय के प्रति उनका तांत्रिक दृष्टिकोण पूरे कार्य में स्पष्ट है। शिव-शक्ति तत्वों में से प्रत्येक शब्द और विषय मृदंग का प्रतिनिधित्व करता है।

नारद श्रोताओं को भी उपदेश देने के लिए उत्सुक रहते हैं। वह उन्हें कभी नहीं छोड़ते संगीतकार और श्रोता दोनों ही पुरस्कारों और कमियों में समान हिस्सा साझा करते हैं। उनके और उनके काम में तंत्र तत्व एक बार फिर उनके तालोत्पत्ति प्रकरण द्वारा मान्य है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनका ताल केवल एक संगत से अधिक माना जाता है, और संगीत से स्वतंत्र रूप से कार्य करता है। इस कार्य में कर्मकांड, आध्यात्मिक और धार्मिक प्रवृत्ति अधिक मजबूत है। उपर्युक्त दावा इस तथ्य से समर्थित है कि हम नियमित रूप से रागों के साथ उनके निर्दिष्ट समय में शब्द नाम (ताल) और उचित मधुर संगीत सुनने से उपलब्धियों का अनुभव करते हैं। तथ्य यह है कि विषयों को सही ढंग से और व्यवस्थित रूप से व्यवस्थित नहीं किया गया है, यह कार्य का एकमात्र दोष है। जबकि सभी विषयों को पहले समाहित किया गया है, परिभाषाएँ अंतिम खंड में शामिल की गई हैं। कुल मिलाकर, "संगीत मकरंद" एक अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य है जो "संगीत रत्नाकर" और "बृहद्धेशी" को जोड़ता है। यद्यपि यह संगीत के व्यावहारिक पक्ष के संदर्भ में बहुत उपयोगी नहीं होगा, लेकिन इसमें अतीत के संगीत के बारे में कई मौलिक और विशिष्ट सिद्धांत शामिल हैं।

प्रथम अध्याय में शोधार्थी द्वारा पंडित नारद का परिचय देते हुए नारद का काल निर्धारण एवं परिचय स्पष्ट किया गया है । द्वितीय अध्याय मे शोधार्थी द्वारा सम्पूर्ण ग्रंथ का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। नारद विरचित: संगीत मकरंद ग्रंथ को क्रमश: दो अध्याय संगीतध्याय व नृत्याध्याय तथा दोनों अध्यायों को चार चार पादों मे विभाजित किया गया है। तत्पश्चात शोधार्थी तथा शोधार्थी के मार्गदर्शक व शोधार्थी के पिता द्वारा व संगीत अथवा संस्कृत के गुनिजनों के संगीत मकरंद की व्याख्या का हिन्दी अनुवाद अन्वय व भावार्थ के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है। तृतीय अध्याय के अंतर्गत शोधार्थी द्वारा संगीत मकरंद के अवनद्ध वाद्यों व अन्य वाद्यों का विवरण दिया गया है। देवर्षि नारद द्वारा रचित संगीत मकरंद ग्रंथ मे संगीत की सभी विधाओं पर प्रकाश डाला गया है। संगीत मकरंद के प्रथम अध्याय संगीतध्याय के चतुर्थ पाद मे वाद्य विशेष के अंतर्गत वाद्यों का वर्णन प्राप्त होता है, जिसमे सुषिर व अवनद्ध वाद्यों का नाम इस प्रकार से दिये गए है। सुषिर वाद्यों मे शृङ्गं, कहला, मुखरिका, उडु, मन्द्रा, करणा आदि। अवनद्ध वाद्यों मे मृदङ्ग, ददुर्र, पणव, झर्झरी, पटह, आलिङ्ग, ढक्का, डमरुगा, मडु, झर्झर, डिण्डिमा, कटका। चतुर्थ अध्याय के माध्यम से शोधार्थी द्वारा पंडित नारद कृत संगीत मकरंद मे वर्णित एकोत्तरशत ताल, दस ताल प्रबंध व ताल के दश प्राण, के विषय में उपलब्ध माहिती व अध्ययन द्वारा प्राप्त सामाग्री से इस विषय को उजागर करने का प्रयास किया गया है। ताल के दश प्राण का वर्णन विभिन्न विद्वानो द्वारा विभिन्न संगीत ग्रन्थों मे किया गया है, परंतु ताल के दश प्राण मूल स्त्रोत नारद कृत संगीत मकरंद है। संगीत मकरंद ग्रंथ मे समान नाम वाले दशविधताल प्रबंधों का उल्लेख, बृहददेशी व मध्य काल के कुछ संगीत ग्रंथ जैसे 'संगीत रत्नाकर' व अन्य संगीत ग्रन्थों मे भी किया गया है। ताल के दस प्राणों में काल, मार्ग, क्रिया अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यति, प्रस्तार का विस्तार पूर्वक विवरण प्राप्त होता है। पंडित नारद कृत संगीत मकरंद में वर्णित एकोत्तरशत ताल, दस ताल प्रबंध व ताल के दश प्राण से जुड़े प्रत्येक तथ्यो का आधार मानते हुये इस अध्याय का कार्य पूर्ण किया गया है।

"पं नारद कृत "संगीत मकरंद" ग्रंथ मे वर्णित ताल एवं अवनद्ध वाद्यों का समग्रलक्षी अध्ययन"

"Pt. Narad krut "Sangeet Makarand" Granth me varnit Taal evm Avanaddha Vaadhyo ka Samagralakshi Adhyayan"

SUMMARY

To

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA FOR THE AWARD OF THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY

IN

TABLA

BY

AKSHITA BAJPAI

UNDER THE GUIDEANCE OF

PROF. GAURANG BHAVSAR

सत्यं शिवं सुन्दरम्

Estd. 1949

Accredited "A+" by NAAC

DEPARTMENT OF TABLA

FACULTY OF PERFORMING ARTS

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA

VADODARA -390001

2019-2024

Registration Date: 20 March 2019

Registration No: FOPA/86

सारांश

भारतीय संगीत की अमूल्य धरोहर को संजोकर रखने वाले ग्रंथों में से एक **"नारद कृत संगीत मकरंद"** अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। नारद कृत "संगीत मकरंद" संगीत का एक संक्षिप्त परन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थ है, जो संगीत की सभी प्रदर्शन कलाओं गीत, वाद्य, नृत्य और नाट्य को शामिल करता है। विभिन्न विषयों पर संस्कृत पांडुलिपियों का एक व्यापक संग्रह उपलब्ध है, जिसकी खोज की जा रही है, वर्तमान में पांडुलिपियों का बहुत महत्व है और कई पुस्तकालयों व संग्रहलयों में सुरक्षित किया गया है, संस्कृत की अधिकांश पांडुलिपियाँ स्थानीय लिपि या देवनागरी लिपि में लिपिबद्ध है। पांडुलिपि को समझने, विषय की सटीक व्याख्या देने व सही ढंग से संपादित करने के लिए व्यक्ति को भाषा और विषय दोनों में पारंगत होना महत्वपूर्ण है। ऐसा माना जा सकता है कि पं० नारद कृत **"संगीत मकरंद"** देसी संगीत पर आधारित कार्य है, जो तंत्र विचार पर आधारित है। संगीत में उपयोग की जाने वाली शब्दावली का आधार तंत्र-पुरुष और प्रकृति का विचार है जो पुरुष-महिला दृष्टिकोण के समान है। रागों का वर्गीकरण, मृदंग की ध्वनि, नाद, स्वर, श्रुति, ताल आदि की क्रमागत उन्नति उपरोक्त कथन को समर्थित करता है। संगीत मकरंद मे रागो की मूर्छना पद्धती का वर्णन किया गया है, इससे तीन ग्रामों में से प्रत्येक में से सात मूर्छना निकलती है। रागों के निर्माण में दो साधारण स्वरों को छोड़कर कोई विक्रत स्वर का नहीं प्रयोग किया गया है।

सभी तथ्यात्मक साक्ष्यों तथा विद्वानो के मतानुसार यह माना जा चुका है की संगीत मकरंद 9वीं शताब्दी ई० पू०(A.D) से पहले का है संगीत मकरंद भरत भाष्यम और बृहददेशी के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है, इसलिए मैंने इस विशिष्ट कृति, नारद के संगीत मकरंद को चुना है। मतंग द्वारा वर्णित देसी रागों के बारे में अधिक जानना संभव नहीं है क्योंकि बृहददेशी के देसी रागों पर अध्याय अभी तक तथ्यपरक नहीं है। इसके अलावा, इस ग्रन्थ पर उचित ध्यान नहीं दिया गया है। प्राचीन काल से संगीत की विभिन्न संस्कृत रचनाएँ है, जैसे-ओमापतम,संगीता चूडामणि और संगीता नारायण क्योंकि संस्कृत अभी भी व्यापक रूप से नहीं बोली जाती है। बहुत ही कम लोग है जो संस्कृत और संगीत में समान रूप से निपुण हैं, जिनके द्वारा संगीत पर संस्कृत कार्यों की व्याख्या की

जा सकती है। संगीत मकरंद ग्रंथ के माध्यम से संगीत के साधन, स्वर, राग, ताल और लय जैसे महत्वपूर्ण तत्वों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त होती है तथा भारतीय संगीत के विभिन्न पहलुओं के साथ-साथ इसके महत्वपूर्ण सिद्धांतों को समझने में हमें संगीत मकरंद की सहायता मिलती है। यह ग्रन्थआध्यात्मिक संगीत का महत्व बताता है। नारद की शिक्षाओं से हमें पता है कि संगीत एक अलग तरह की कला है जो मन, शरीर और आत्मा को संघर्ष, संवाद और समरसता करने में सक्षम बनाती है।

इस ग्रंथ को पढ़ना संगीत की रहस्यमयी दुनिया को समझने का एक अद्वितीय अनुभव है। यह शोध कार्य मेरा एक मामूली प्रयास है, और मुझे उम्मीद है कि संगीत के प्रति उत्साही और छात्रों के लिए समान रूप से लाभप्रद रहेगा।

"पं नारद कृत "संगीत मकरंद" ग्रन्थ में वर्णित ताल एवं अवनद्ध वाद्यों का समग्रलक्षी अध्ययन" संगीत मकरंद ग्रन्थ के काल निर्धारण में कई मत मतांतर पाये जाते है। यह विषय वस्तु की परिशुद्ध जानकारी शोध द्वारा निश्चित करने हेतु तथा संगीत मकरंद में वर्णित तालों का ताल के दश प्राणों एवं अवनद्ध वाद्यों का जो वर्णन पं० नारद जी द्वारा किया गया है उसे उनके पूर्ववर्ती व परवर्ती ग्रंथो के आधार पर प्रस्तुत करते हुए, तथा संगीत मकरंद में वर्णित तथ्यों के द्वारा उस समय वाद्यों एवं तालो की आवश्यकता किन आधारों पर थी इस जानकारी को एकत्रित किया गया है। संगीत मकरंद में वर्णित एकोत्तरशत ताल ,ताल के दश प्राण,ताल प्रबंध व अवनद्ध वाद्यों का वर्तमान स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। इन सभी तथ्यों को शोध विषय के अंतर्गत आवश्यकता अनुसार कार्य किया गया है। संगीत मकरंद के काल से सम्बंधित विभिन्न मतान्तरों की भी निश्चित जानकारी प्राप्त कराने और विषय की महत्ता को समझने का प्रयास करते हुए विषय के अन्य पहलुओ को प्रकट किया गया है। विभिन्न संगीतज्ञों द्वारा संगीत ग्रंथों में अवनद्ध वाद्यों व तालों के विकास की चर्चा की है तथा विभिन्न ग्रंथों में अवनद्ध वाद्यों और तालों से जुड़ी जानकारी प्रस्तुत की गयी है जैसे-वाद्यों की बनावट, वादन शैली तथा वाद्यों को किस विशेष अवसर पर बजाया जाता था, और कौन सी ताल का अधिक वादन किया जाता था आदि को आधारभूत तथ्यों के साथ रखा गया है। संगीत मकरंद में वर्णित अवनद्ध वाद्यों, तालों ,ताल प्रबंध व ताल के दश प्राणों के विषय मे जो नवीन तथ्य प्राप्त हुए है उन्हे

प्रस्तुत किया गया है। इस शोधकार्य के माध्यम से संगीत जगत मे एक नयी विचारधारा संचारित होगी जो संगीत जगत की प्रत्येक विधा से जुड़े विद्यार्थियों संगीत के कलाकारों एवं समग्र संगीतज्ञों को लाभ व एक नवीन दृष्टिकोण संगीत के विद्यार्थियों को मिलेगा।

प्रथम अध्याय -नारद का परिचय एवं काल निर्धारण में शोधार्थी द्वारा पंडित नारद का परिचय देते हुए नारद का काल निर्धारण एवं परिचय स्पष्ट किया गया है, संगीत मकरंद देवर्षि नारद द्वारा रचित ग्रंथ है, जो कि अनेक विचारों का अध्ययन करके धार्मिक दृष्टी को समझते हुये, देवर्षि नारद के विषय मे कई मतभेद है, कि संगीत मकरंद के रचनाकार देवर्षि नारद कोई दूसरे नारद रहे होंगे या नारद नाम का कोई सम्प्रदाय रहा होगा, जो नारद के नाम से विचारों का प्रतिपादन करता होगा, किन्तु शोधछात्रा का विचार है, कि संगीत मकरंद के रचनाकार देवर्षि नारद वही नारद है, जिनकों सभी देवर्षि नारद, मुनि नारद, गन्धर्व नारद, ऋषि नारद, सिद्ध पुरुष नारद, ब्रह्मचारी नारद के रूप मे जानते है। संगीत मकरंद के रचनाकार पंडित नारद (देवर्षि नारद) के विषय मे विद्वानों के विभिन्न मत है। संगीत मकरंद के विषय मे तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि यह एक पाण्डुलिपि है, जिसके होने का सिद्ध प्रमाण गुजरात स्थित बड़ौदा की ''सेंट्रल लाइब्रेरी'' मे था, ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि संगीत मकरंद कि पांडुलिपी वर्तमान मे (Oriental Institute of Baroda) प्राच्य विद्या मंदिर बड़ौदा मे है। शक संवत 1599 अर्थात् 1677 ई० मे 'कृष्णाजी दत्त' नाम के व्यक्ति द्वारा प्राचीन प्रतिलिपि से नवीन संशोधित प्रतिलिपि तैयार की गयी थी। इस पर विचार करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है, कि शक संवत 1599 अर्थात् 1677 ई० मे इसकी नवीन प्रतिलिपि तैयार करने के कारण ही कुछ विद्वान् संगीत मकरन्द को 16वीं, व 17वीं शताब्दी का ग्रन्थ मानने लगे। काल निर्णय निर्धारण की चर्चा करते हुये, संगीत मकरंद को 7वीं शताब्दी से 10वीं शताब्दी के मध्य मानना उचित होगा। विभिन्न तथ्यों को आत्मसात करते हुए संगीत मकरंद को 7वीं से 10वीं शताब्दी काल के प्रमुख ग्रन्थों मे से महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है।

द्वितीय अध्याय-संगीत मकरंद का अध्ययन मे शोधार्थी द्वारा सम्पूर्ण ग्रंथ का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। नारद विरचित: संगीत मकरंद ग्रंथ को क्रमश: दो अध्याय संगीतध्याय व नृत्याध्याय तथा दोनों अध्यायों को चार-चार पाद जो इस प्रकार है-सङ्गीताध्याये प्रथम पाद, सङ्गीताध्याये द्वितीय पाद,

सङ्गीताध्याये तृतीय पाद, सङ्गीताध्याये चतुर्थ पाद, नृत्याध्याये प्रथम पाद, नृत्याध्याये द्वितीय पाद, नृत्याध्याये तृतीय पाद, नृत्याध्याये चतुर्थ पाद मे विभाजित किया गया है। तत्पश्चात शोधार्थी तथा शोधार्थी के मार्गदर्शक व शोधार्थी के पिता द्वारा व संगीत अथवा संस्कृत के गुनिजनों के संगीत मकरंद मे वर्णित 560 श्लोको की व्याख्या का हिन्दी अनुवाद अन्वय व भावार्थ के साथ प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय संगीत मकरंद में वर्णित अवनद्ध वाद्यों का अध्ययन के अंतर्गत शोधार्थी द्वारा संगीत मकरंद के अवनद्ध वाद्यों व अन्य वाद्यों का विवरण दिया गया है। देवर्षि नारद द्वारा रचित संगीत मकरंद ग्रंथ मे संगीत की सभी विधाओं पर प्रकाश डाला गया है। यह अध्याय संगीत मकरंद में वर्णित अवनद्ध वाद्यों से संबंधित विषय को ध्यान मे रख कर लिखा गया है। इस अध्याय मे शोधार्थी द्वारा अवनद्ध वाद्यों से संबंधित सभी तथ्यों को समन्वित करते हुए संगीत मकरंद के पूर्ववर्ती व परवर्ती ग्रंथो ऋग्वेद, यजुर्वेद,अर्थववेद तथा महाभारत काल में वर्णित अवनद्ध वाद्यों का वर्णन किया गया है। देवर्षि नारद द्वारा रचित संगीत मकरंद ग्रंथ मे संगीत की सभी विधाओं पर प्रकाश डाला गया है। संगीत मकरंद के प्रथम अध्याय संगीतध्याय के चतुर्थ पाद मे वाद्य विशेष के अंतर्गत वाद्यों का वर्णन प्राप्त होता है, जिसमे सुषिर व अवनद्ध वाद्यों का नाम इस प्रकार से दिये गए है। सुषिर वाद्यों मे शृङ्ग, कहला, मुखरिका, उडु, मन्द्रा, करणा आदि। अवनद्ध वाद्यों मे मृदङ्ग, ददुर्र, पणव, झर्झरी, पटह, आलिङ्ग, ढक्का, डमरुगा, मडु, झर्झर, डिण्डिमा, कटका। अवनद्ध वाद्यों की आलौकिकता अगम्य है अवनद्ध वाद्यों का क्रमिक विकास देखे तो अति प्राचीन काल से ही दुंदुभि, डमरू, ढक्का, इत्यादि वाद्य निर्मित हो चुके यह कि इनके विकास क्रम को झुठलाया नहीं जा सकता। प्रत्येक चरण पर पड़ाव आए परन्तु ऋषि मुनियों के अनुसंधान ने इस क्रम को नवीन दिशा प्रदान की स्वाति मुनि द्वारा पुष्कर वाद्यों कि कल्पना व निर्माण भारतीय अवनद्ध वाद्यों के लिए महानतम खोज है।

चतुर्थ अध्याय-संगीत मकरंद में वर्णित तालों का अध्ययन के माध्यम से शोध छात्रा द्वारा पंडित नारद कृत संगीत मकरंद मे वर्णित एकोत्तरशत ताल, दस ताल प्रबंध व ताल के दश प्राण, के विषय में उपलब्ध माहिती व अध्ययन द्वारा प्राप्त सामाग्री से इस विषय को उजागर करने का प्रयास किया गया है। संगीत मकरंद ग्रंथ मे समान नाम वाले दशविधताल प्रबंधों का उल्लेख, बृहददेशी व मध्य

काल के कुछ संगीत ग्रंथ जैसे 'संगीत रत्नाकर' व अन्य संगीत ग्रन्थों मे भी किया गया है। ताल के दस प्राणों में काल, मार्ग, क्रिया अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यति, प्रस्तार का विस्तार पूर्वक विवरण प्राप्त होता है। पंडित नारद कृत संगीत मकरंद में वर्णित एकोत्तरशत ताल, दस ताल प्रबंध व ताल के दश प्राण से जुड़े प्रत्येक तथ्यो का आधार मानते हुये इस अध्याय का कार्य पूर्ण किया गया है।

अंत मे उपसंहार के अंतरगर्त सभी पांचों अध्यायों का सार व निष्कर्ष को समाहित किया गया है। समस्त अध्यायों ब उनके उपअध्यायों का भी सार प्रस्तुत किया गया है। जिसके अंतरगर्त पं० नारद का काल निर्धारण एवं परिचय के साथ संबन्धित सभी विषयों को बताने का प्रयास किया गया है। संगीत मकरंद ग्रन्थ की विवेचना करते हुए समस्त अध्यायों का परिचय प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। संगीत मकरंद में वर्णित अवनद्ध वाद्यों से संबन्धित सभी विषयों को बताने का प्रयास किया गया है। अंत मे संगीत मकरंद में वर्णित समस्त तालों से संबन्धित सभी विषयों व संगीत मकरंद में वर्णित तालों की उपादेयता को बताने का प्रयास किया गया है।

(Akshita Bajpai)